रात्रिक्लास 26.3.68 ओमशान्ति अपन को आत्मा समझ बाप की याद में हो?
जिसको निश्चय हो गया है कि हम बाबा से ही पढ़ते हैं औरों को भी पढ़ाते हैं, अपनी राजधानी स्थापन करने लिए ही सभी कुछ करते हैं। यह सिर्फ तुम ही जानते हो। श्रीमत पर इतनी ऊँच राजधानी स्थापन करते हैं। फिक्र तो होना चाहिए ना। बाप कहते हैं तुम कल्प–2 कमाल कर दिखाते हो। तुम्हारा पार्ट है। कितनी खुशी होती है। ड्रामा कैसा अच्छा बना हुआ है। कोई अच्छी तरह समझा सकते हैं। इस समय जो भी अच्छे बच्चे गिने जाते हैं उनसे भी और अच्छे बनेंगे। यह तो समझते हो हम नई दुनियां के मालिक बनेंगे। गाया जाता है स्तुति–निन्दा, मान–अपमान, दुःख–सुख सभी सन्तुष्ट हो चलता है वह अच्छा होता है। यहां स्तुति–निन्दा दोनों ही हैं। वहां दोनों नहीं होती। सतयुग में बुरा काम कोई करते ही नहीं। इस समय ही यह सभी बातें सामने आती हैं। वहां तो यह बातें होती ही नहीं। मान–अपमान की बात ही नहीं; इसलिए राजयोग का ज्ञान भी है। जो यहां के हैं वह वहां से भी निकल आते हैं। निश्चय होता है तो फिर उमंग होता है। हर्षित भी बहुत रहते हैं। बाप भी खुश है तो बच्चे भी खुश हैं। अज्ञान काल में भी होता है, बच्चा अच्छा पढ़ता है तो बाप भी खुश होते हैं। न पढ़ते हैं तो समझते हैं कल्प पहले भी ऐसे ही पढ़े थे। लहर नहीं आती। फिर भी बच्चों को पुरुषार्थ कराया जाता है। दो ईंजन मिली हुई है ऊँच बढ़ाने लिए। यह है संगम। तुम बताते हो बाकी टाइम थोड़ा है। बाप आते ही हैं सृष्टि को बदलने लिए। सभी तैयारियां रहती हैं। गाया जाता है बहुत गई थोड़ी रही.....तुम तो प्रैक्टिकल जानते हो टाइम थोड़ा है। रास्ता लेना है। आधा कल्प जो काम न कर सके वह इस जन्म में करना है; क्योंकि समझाने वाला भी मिला है। फिर माया भी पुरुषार्थ में विघ्न डालती है। खुशी तो बच्चों को ज़रूर होनी चाहिए। हम बाप के बने हैं। बाप से नई दुनियां का वर्सा मिलता है। जब सतयुग था तो मुक्ति–जीवमुक्ति दोनों ही थी। नई दुनियां भी थी और शान्ति भी थी। तो ऐसी विचार–सागर–मंथन भी रहनी चाहिए। तुम बच्चों का यही धंधा है। शरीर निर्वाह लिए तो कुछ करना न है। वृद्धि होती जावेगी। चोटी बढ़ती जावेंगी। यहां के बच्चे जन्म लेते जावेंगे बाबा पास अथवा मरजीवा बनते जावेंगे। तुम्हारा झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। तुम बहुतों का कल्याण करते हो; इसलिए पद भी पाते हो। फिर तुम्हारी पूजा भी होती है। हम ही पूज्य फिर हम ही पुजारी बनते हैं। बाबा समझा रहे हैं गीता पढ़ने से तुम नर से नारायण नहीं बनेंगे, न ही ज्ञान का तीसरा नेत्र ही दे सकते हैं। तुम देखते हो जो ऊँच बनते हैं उनकी ही भूतों की पूजा कर रहे हैं। ऐसी–2 वण्डरफुल बात कल्प–कल्प हम सुनते हैं। जो कुछ एक्ट होती है वह फिर रिपीट होनी है। तुम बच्चों पास चक्र फिरता ही रहता है। यह ही सुनाते रहो। ज्ञान से सभी को वाकुफ करते रहते ही हैं ड्रामा के प्लैन अनुसार। फिर भी बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। अथाह खुशी रहनी चाहिए। माया खुशी को कट कर देती है। नहीं तो तुम खुशी में उड़ पड़ो। बाकी यह ज़रूरी है बाप को याद करने से, पढ़ाई पढ़ने से खुशी होती है। बाप देखते हैं कैसे–2 बच्चे पढ़ते हैं। कैसी चलन है। बाबा बतलाते भी रहेंगे। फलानी–2 कैसी तीखी है। तुम कितनी ठंडी हो। तुम भी सर्विस करो। महारथियों की, घोड़वासवारियों की, प्यादे की चलन को देखो। स्कूल में पिछाड़ी में बैठने वालों को लज्जा आती है। समझते हैं हम कम मार्क्स से पास होंगे। बहुत–2 मीठा बनना है। बाप बहुत मीठा है। प्यार का सागर है। बाप को याद करने से बड़ी खुशी होती है। बेहद का बाप बेहद का वर्सा। आत्मा समझ बाप को और वर्से को याद करो। कितनी सहज है। अच्छा, बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। बाप निष्ठा में जास्ती नहीं बैठते हैं ; क्योंकि बाप खुद ही कहते हैं चलते–फिरते तो हम बहुत ही खुशी हो बाप को याद करता हूं। याद में कितना भी पैदल करो थकेंगे नहीं। जितना याद करते जावेंगे निकलती जावेगी। तीर्थों पर पैदल जाते हैं कितना खुश होते हैं। वह सभी है भक्तिमार्ग। भक्ति है रात। तुम्हारा अभी दिन होता है।